



21050



₹ 15.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5007-353-7 (वर्षा-सैट)  
978-93-5007-368-1

# जीतस्य पिपनिका



पठनम् एव अवगमनम्



प्रथम संस्कृत संस्करण : अगस्त 2015 श्रावण 1937

पुनर्मुद्रण : जुलाई 2020 श्रावण 1942

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2015

PD 153TRPS

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, (स्वर्गीय) लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

संपादक ( संस्कृत ) – कृष्णचन्द्र त्रिपाठी

संस्कृत अनुवाद – रणजित बेहेरा, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

चित्रांकन, सज्जा तथा आवरण– निधि वाधवा

संस्कृत समीक्षा समिति

यज्ञ दत्त शर्मा, सेवानिवृत्त प्रोफेसर संस्कृत, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी, प्रोफेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली; राजेश्वर प्रसाद मिश्र, प्रोफेसर संस्कृत, संस्कृत पालि एवं प्राकृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा; भागीरथी नन्द, एसोसिएट प्रोफेसर, साहित्य विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली; पतञ्जलि कुमार भाटिया, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; सूर्य नारायण नन्द, अतिथि अध्यापक, सेंट स्टीफेन्स कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; हरेकृष्ण अगस्ति, असिस्टेंट प्रोफेसर, व्याकरण विभाग, कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र; सुगन्ध पाण्डेय, टी.जी.टी. संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय, काशीपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड; निर्मल मिश्र, टी.जी.टी. संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय, नरेला, दिल्ली; डॉ. जतीन्द्र मोहन मिश्र, सह आचार्य, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

आभार ज्ञापन

प्रो. बी.के.त्रिपाठी, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; कृष्ण कुमार, पूर्व-निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; वसुधा कामथ, पूर्व-संयुक्त-निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोद्योगिकी संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; उमा शंकर शर्मा ऋषि, पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार; के. के. वशिष्ठ, पूर्व-विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा चन्द्रप्रभु ऑफ़सेट प्रिंटिंग वर्क्स प्रा. लि., सी-40, सैक्टर-8, नोएडा 201 301 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-93-5007-353-7 (वर्षा-सैट)  
978-93-5007-368-1

वर्षा-क्रमिक-पुस्तकमाला प्राथमिककक्षायाः बालानां कृते वर्तते। अस्याः अभिप्रायः – ‘बोधनेन सह’ स्वयंपठनस्य अवसरपरिकल्पनं वर्तते। अस्याः पुस्तकमालायाः कथाः चतुर्षु स्तरेषु पञ्चसु कथावस्तुषु च विभक्ताः सन्ति। ‘वर्षा’ बालानाम् सानन्दं पठने स्थायिपाठकत्वेन निर्माणे च सहायिका भविष्यति। बालेभ्यः दैनन्दिन्यः लघुलघुघटनाः कथा इव रुचिकराः प्रतीयन्ते। अतः वर्षा-मालिकायाः सर्वाः कथाः दैनिकजीवनस्य अनुभवान् आधृत्य वर्तन्ते। लघुबालानां पठनाय प्रचुरमात्रायां पुस्तकानि उपलब्धानि स्युरिति अस्याः पुस्तकमालायाः अपरमुद्देश्यं वर्तते।

वर्षा-पुस्तकमाला बालानां पठन-शिक्षणे, स्थायिपाठकनिर्माणे, सूचनासंग्रहणे पाठ्यचर्यायाः प्रत्येकं क्षेत्रे च सहायिका भविष्यति। शिक्षकाः वर्षा-मालिकां कक्षायाम् तथा स्थापयेयुः येन बालाः सुखेन पुस्तकानि ग्रीहीतुं शक्नुयुः।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्टेकरे, बानाशंकरा III स्टेज, बंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस, निकटः धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : अनूप कुमार राजपूत मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा  
मुख्य संपादक : श्वेता उष्यल मुख्य व्यापार प्रबंधक : विपिन दिवान



# जीतस्य पिपनिका



जीतः

बबली



एकदा जीतस्य अङ्कनी कुत्रापि विलुप्ता।  
सः सर्वत्र अङ्कनीम् अन्विष्टवान्।



जीतः अङ्कनीं स्व-स्यूते अन्विष्टवान्।  
तस्य स्यूते बहूनि वस्तूनि आसन्।





4

बबली जीतस्य स्यूतम् अधोमुखं कृतवती।

तस्मात् गुल्ली, पक्षः, सूत्रं, ढक्कनं प्रस्तर-खण्डाश्च अपतन्।



जीतस्य स्यूतात् अन्यानि अपि वस्तूनि बहिः आगतानि।  
बबली आम्रबीजं गृहीतवती।





6

समीरः आम्रबीजं द्रष्टुम् आरभत।

जीतः अवदत् यत् एषा पिपनिका वर्तते।



जीतः आम्रबीजस्य घर्षणं कृत्वा पिपनिकां निर्मितवान्।  
पिपनिकातः उच्चैः ध्वनिः निःसरति स्म।





जीतः पिपनिकां वादयितुम् अकथयत्।  
बबली उच्चैः पिपनिकाम् अवादयत्।



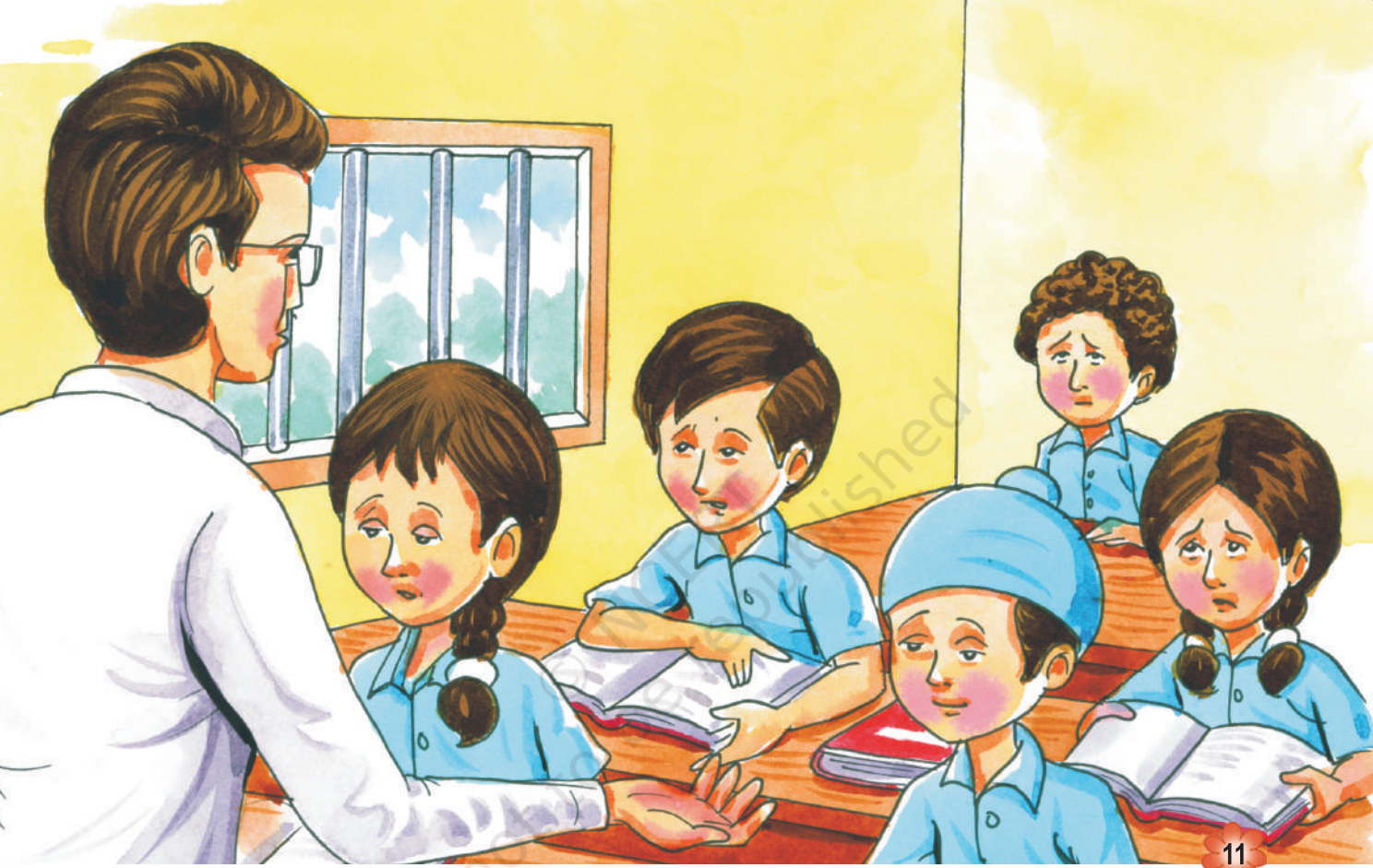
अस्मिन् अवसरे शिक्षकः आगच्छत्।  
सः पिपनिकायाः ध्वनिं श्रुतवान्।





10

सर्वे छात्राः स्व-स्थानेषु पुनः उपाविशन्।  
सर्वे स्व-स्व-पुस्तकानि उद्घाटितवन्तः।



शिक्षकः अपृच्छत् यत् कः ध्वनिं करोति?  
सर्वे तूष्णीं जाताः।





शिक्षकः पुनः अपृच्छत्।

बबली अवदत् यत् जीतः पिपनिकाम् आनीतवान्।



शिक्षकः पिपनिकां दातुम् अकथयत्।

भयातुरा बबली शिक्षकाय पिपनिकां दत्तवती।



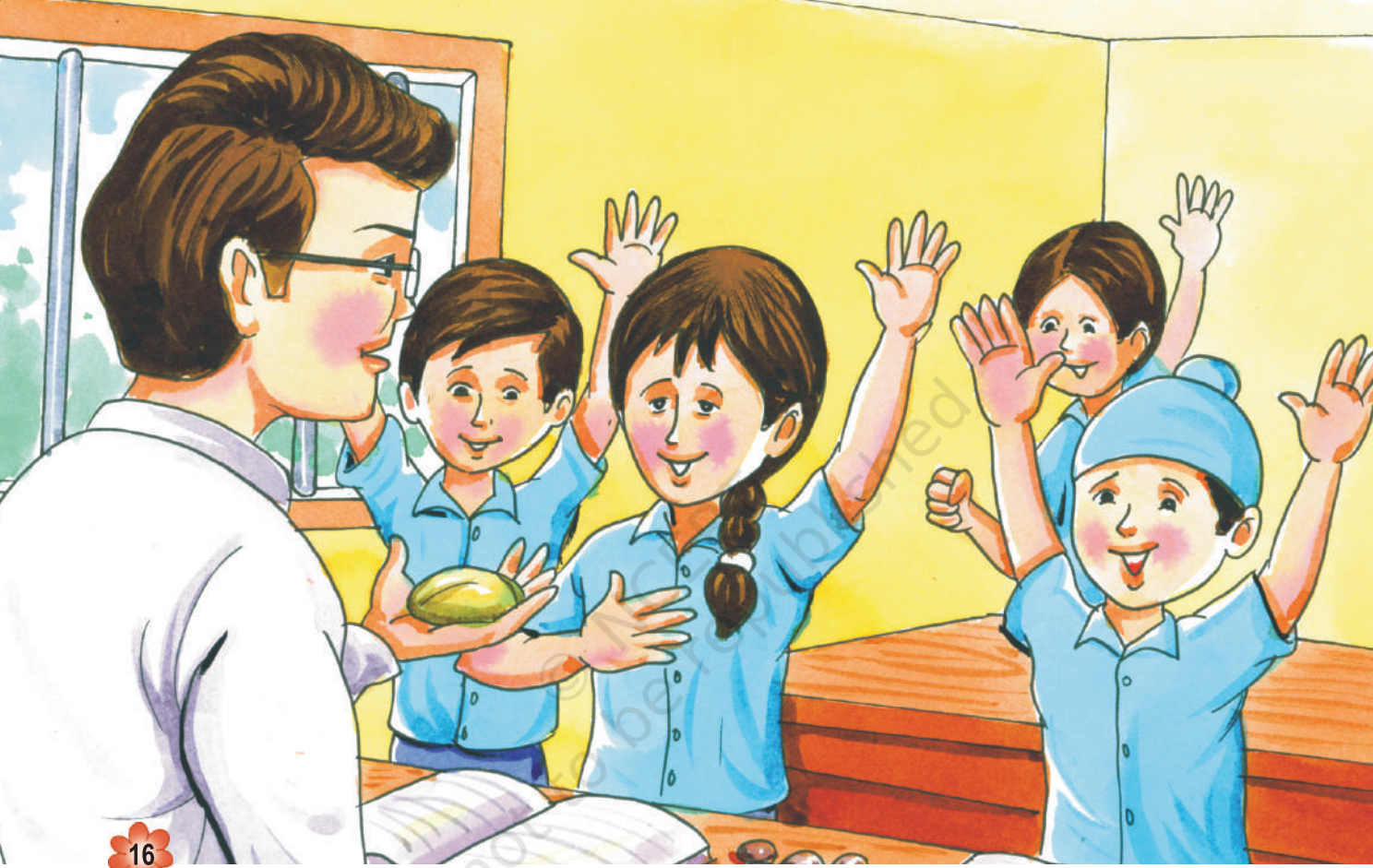


शिक्षकः पिपनिकां वादयितुम् अयतत।  
पिपनिकातः ध्वनिः न निःसृतः।



शिक्षकः अवदत् यत् कोऽपि पिपनिकां वादयेत्।  
सः पिपनिकां दातुं हस्तं प्रसारितवान्।





16

बालाः पिपनिकां वादयितुं शिक्षकं प्रति अधावन्।  
वयं वादयिष्यामः, वयं वादयिष्यामः, वयं वादयिष्यामः।

# जीत-बबल्यो: अपरा: कथा:

